नर्मदा मध्य भारत के लिये वरदान

सचिन प्रधान
रूड़की (उत्तराखंड)

नदियाँ केवल जलधाराएँ ही नहीं अपितु उस क्षेत्र के जनजीवन और लोक–संस्कृति का अभिन्न अंग होती हैं। भारत में आदिकाल से ही नदियों के महत्त्व को समझ लिया गया था जिसके कारण इन्हें धर्म और जीवन से जोड़ा गया। भारत सहित विश्व भर में नदियाँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक रचनात्मक कार्यो का केन्द्रस्थल रही हैं। भारत में विशेष अवसरों एवं त्यौहारों के समय करोडों लोग नदियों में स्नान करते हैं। यहाँ समय–समय पर नदियों के किनारे विशेष मेलों का आयोजन किया जाता है, जिनमें विभिन्न वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के हिस्सा लेते हैं। नदियों के तट पर कुंभ, सिंहस्थ जैसे विशाल मेले भारतीय संस्कृति की विरासत हैं, जहाँ करोड़ो लोग एकत्र होते हैं। ऐसे अवसरों पर विभिन्न स्थानों से आने वाले व्यक्ति अपने विचारों एवं संस्कृति का आदान–प्रदान करते हैं। इसीलिए नदियों को जीवन की गतिशीलता का प्रतीक भी माना गया है। अनवरत प्रवाहित रहने वाली नदियाँ मानव को निरन्तर कार्य करने का संदेश देती हैं।

किसी भी देश की भौगोलिक एवं आर्थिक व्यवस्था में नदियों का विशेष महत्त्व रहा है क्योंकि अन्न और जल की सुविधा होने के कारण नदियों की घाटियों में प्राचीनकाल से ही संस्कृतियाँ जन्म लेती रही हैं। नदियाँ संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के साथ–साथ विकास की भी जननी रही हैं। सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदी तटों के समीप ही हुआ है। करीब साढ़े चार हजार वर्ष पूर्व मिस्र में नील नदी के किनारे मिस्र की महान सभ्यता विकसित हुई। मेसोपोटामिया की सभ्यता का विकास ईसा से तीन हजार पाँच सौ वर्ष पूर्व टिगरिस नदी की घाटी में और भारत की प्राचीन मोहनजोदड़ों और हडप्पा सभ्यता का विकास सिंधु नदी घाटी में हुआ। नदी तटों के समीप होने के कारण ही प्राचीन सभ्यताओं का नामकरण नदी सभ्यताओं के रूप में किया गया है।

गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, सिंधु, झेलम, ताप्ती, चिनाब, व्यास आदि अनेक नदियाँ भारतीय जनजीवन और लोक संस्कृति से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। जिस प्रकार से गंगा को राष्ट्र की संस्कृति का मेरूदण्ड कहा गया है, वही 'नर्मदा' को मध्य भारत की जीवन–रेखा की संज्ञा दी गई है। प्रस्तुत आलेख में हम नर्मदा के भौगोलिक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वरूप की चर्चा करेंगे।

अमृतमयी पुण्य सलिला नर्मदा की गणना देश की प्रमुख नदियों में की जाती है। यह भारत में पांचवी सबसे बड़ी नदी है, जो मध्य भारत के मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों में बहने वाली एक प्रमुख बारहमासी नदी है। यह 1312 किमी. की कुल लम्बाई के साथ प्रायद्वीपीय भारत की अधिकांश नदियों की दिशा के विपरीत पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। नर्मदा नदी का उद्गम अनूपपुर जिले के अमरकंटक नामक स्थान से 1057 मीटर की ऊँचाई से होता है। अपना पूरा सफर तय करने के बाद यह गुजरात के भरूंच के निकट खंभात की खाड़ी में गिरती है। अपनी कुल लम्बाई का 80 प्रतिशत, लगभग 1077 कि.मी. की यात्रा यह मध्य प्रदेश के शहडोल, मण्डला, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, खण्डवा तथा खरगौन जिलों में तय करती है। इसके बाद 74 कि. मी. महाराष्ट्र को स्पर्श करती हुई बहती है। जिसमें 34 कि. मी. मध्य प्रदेश के साथ और 40 कि.मी. तक गुजरात के साथ महाराष्ट्र की सीमाएँ बनाती है। खंभात की खाड़ी में गिरने से पहले लगभग 161 कि.मी. गुजरात में बहती है। इस प्रकार इसके प्रवाह पथ में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात तीन राज्य पड़ते हैं। नर्मदा का कुल जल–संग्रहण क्षेत्र 98796 वर्ग कि.मी. है, जिसमें से 88.02 प्रतिशत क्षेत्र मध्य प्रदेश में, 3.31 प्रतिशत क्षेत्र महाराष्ट्र में तथा 8.67 प्रतिशत क्षेत्र गुजरात में है। नदी के कछार में 160 लाख एकड़ भूमि खेती के लायक है, जिसमें से 144 लाख एकड़ क्षेत्र अकेले

मध्य प्रदेश में है एवं शेष महाराष्ट्र और गुजरात में है। नर्मदा–कछार का विस्तार नर्मदा के उत्तर की तुलना में दक्षिण में अधिक है।

नर्मदा भारत की सबसे निर्मल नदियों में से एक है। यह उत्तर में विंध्याचल से, दक्षिण में सतपुड़ा, पूर्व में मैकल और पश्चिम से अरब सागर द्वारा घिरी है। बेसिन के ऊपरी हिस्से में पहाड़ी क्षेत्र है और मध्यम व निचले हिस्से विस्तृत और उपजाऊ क्षेत्र हैं जो खेती के लिए अत्यंत अनुकूल है। एक छोटे से कुंड के रूप में अवतरित इस नदी का स्वरूप यात्रा के अन्त में समुद्र से मिलन के समय अत्यन्त विशाल हो जाता है।

वैसे तो छोटी–बड़ी इकतालीस सहायक नदियाँ नर्मदा से मिलकर सागर तक जाती हैं, लेकिन नर्मदा जलग्रहण क्षेत्र में सम्मिलित होने वाली सहायक नदियों में उन्नीस प्रमुख हैं। इनमें हिरण, तिन्दोनी, बारना, कोलार, मान, उरी, हथनी व ओरसांग दक्षिण तटीय सहायक नदियाँ हैं और बरनर, बंजर, शेर, शक्कर, दुधी, तवा, गंजाल, छोटा तवा, कुन्दी, गोई एवं करजन वाम तटीय सहायक नदियाँ हैं। विंध्याचल की तुलना में सतपुडा क्षेत्र में वर्षा की मात्रा अधिक होने के कारण नर्मदा की वाम तटीय सहायक, नदियों की संख्या तथा इनमें जल की मात्रा दोनों ही अधिक हैं।

नर्मदा का उद्गम स्थल अमरकंटक के पास नर्मदा कुण्ड, वह स्थान है, जहाँ नदी पहाड़ की कोख से निकलकर पहाड़ की गोद में आती है। पहाड़ के गर्भ में छुपा हुआ पानी यहाँ अवतरित होता है। नवजात शिशु की तरह नदी यहाँ धवल, उज्ज्वल और कोमल होती है। यहाँ से नर्मदा 83 कि.मी. तक पश्चिम तथा उत्तर–पश्चिम दिशा में बहती है। इसी भाग में उद्गम स्थल से लगभग 6 कि.मी. दूरी पर कपिलधारा जल प्रपात है, जहाँ नदी अपने तल से लगभग 30 मीटर नीचे गिरती है। यहीं पास में दूध धारा भी है। डिंडोरी के पास नदी का मार्ग सर्पाकार हो जाता है तथा नदी का तल जमीन की ऊपरी सतह से सामान्यतः 2 से 3 मीटर नीचे है। अमरकण्टक से 140. कि मी. के बाद नर्मदा अचानक दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। यहीं पर बायें किनारे एक महत्वपूर्ण सहायक नदी बरनर का नर्मदा के साथ संगम होता है। मण्डला नगर के चारों ओर नर्मदा एक कुण्डली (मेखला) बनाती है। मण्डला मानो नर्मदा के कान कुण्डल में बसा है। नर्मदा यदि ऐसा ही लपेटा मालवा में लगाती तो इंदौर और गुजरात में बडौदा, नर्मदा के किनारे होते। इंदौर और बड़ौदा जिस सौगात से वंचित रह गए, मण्डला उसे सहज ही पा गया। मण्डला नगर के निकट ही नर्मदा में एक महत्वपूर्ण सहायक नदी बंजर आकर मिलती है। यहीं पास में सहस्त्रधारा है। जबलपुर नगर के निकट स्थित धुआंधार जल प्रपात पर नदी लगभग 15 मीटर नीचे गिरती है। दूर से ही जल बिन्दुओं का धुआं सा उठता दिखाई देता है, इसलिए इसे धुआंधार कहते हैं। धुआंधार प्रपात से जलोढ़ घाटी में प्रवेश तक नर्मदा का मार्ग संगमरमर की चट्टानों के मध्य एक संकरी घाटी से होकर जाता है। धुआंधार में गुस्से में उबलती–उफनती नर्मदा ने मानो यहाँ मौन की दीक्षा ले ली है। धुआँधार के गर्जन–तर्जन के बाद यहाँ नर्मदा की शांत जलधारा–मानो रौद्र के बाद शांत रस इस स्थान का नाम है भेडाघाट, जो पर्यटकों के लिए अत्यन्त आकर्षण का केन्द्र स्थल है।

संगमरमर की संकरी घाटी पार कर उपजाऊ जलोढ़ घाटी में प्रवेश करते ही नर्मदा पुनः पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। इस भाग में नदी की धारा अपेक्षाकृत अधिक चौड़ी है। जबलपुर और होशंगाबाद नगरों के मध्य एक 3 मीटर ऊँचा जल प्रपात नरसिंहपुर के निकट स्थित है। यहाँ से लेकर तवा नदी के संगम तक नर्मदा एक सर्पाकार मार्ग में विन्ध्याचल कगार के सहारे बहती है। इसी बीच संगमरमरी चट्टनों से पूर्व नर्मदा चौंसठ योगिनी मंदिर वाली टेकरी का लपेटा भी लगाती है। भेड़ाघाट के बाद मानो नर्मदा का पाषण–युग समाप्त हो गया है और बालू–युग शुरू हो गया है।

नरसिंहपुर जिले में बायें किनारे से नर्मदा में मिलने वाली सहायक नदियों में शेर, शक्कर और दुधी महत्त्वपूर्ण हैं। होशंगाबाद में वामतटीय सहायक नदियों में तवा सबसे अधिक जलग्रहण

क्षेत्र वाली नदी है। तवा अपने साथ बड़ी मात्रा में जलोढ़ बहाकर लाती है। गंजाल भी नर्मदा की एक प्रमुख सहायक नदी है जो छिपानेर गाँव के पास नर्मदा में मिलती है।

नर्मदा के बायें तट की सहायक नदियों की तुलना मे दायें तट की सहायक नदियाँ संख्या में कम है तथा इनमें जल की मात्रा भी कम है। इनमें हिरण नदी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अन्य दक्षिण तटीय सहायक नदियों में तिन्दोनी, बारना तथा कोलार उल्लेखनीय है।

हंडिया नर्मदा का मध्य है, इसलिए नर्मदा का नाभि–स्थल कहलाता है। अभी तक हमारे लिए अमरकण्टक पास था, अब समुद्र पास होता चला जाएगा। हंडिया से बडवाहा तक नर्मदा नदी एक पथरीले महाखड्ड से होकर बहती है। कल तक नर्मदा बनबाला थी, अब शैल बाला है। इस भाग में मनाधार तथा धरदी, इन दो स्थानों पर चार–चार मीटर ऊँचे जल–प्रपात हैं।

धार के उच्च प्रदेश तथा निमाड के मैदान में छोटा तवा, कुंदी तथा गोई प्रमुख वामतटीय सहायक नदियाँ हैं। यहाँ दक्षिण तटीय सहायक नदियों में मान, उरी तथा हथनी उल्लेखनीय हैं।

जल, चट्टान, प्रपात, शोर और मोड़– ये पाँच तत्व हैं, जिनसे नर्मदा की देह का निर्माण हुआ है। चट्टानों में नर्मदा ने जैसी भागीदारी की है, वैसी कम नदियों ने की होगी। इसमें जितने प्रपात है, उतने शायद ही किसी नदी में हों। कैसे–कैसे मोड़ हैं इसमें–सीध में बहना तो यह जानती ही नहीं। ज्यादा देर चुप भी नहीं रहती। बडवानी नगर के पश्चिम से प्रारम्भ होने वाले 116 कि.मी. लम्बे महाखड्ड से निकलकर भरूंच के मैदान में नर्मदा का मार्ग सर्पाकार रहता है तथा इसकी घाटी एक से डेढ़ कि.मी. चौड़ी है। भरूंच नगर के पश्चिम में नर्मदा नदी खंभात की खाड़ी में सागर में मिल जाती है। यहाँ करजन प्रमुख वामतटीय सहायक नदी है तथा ओरसांग प्रमुख दक्षिण तटीय सहायक नदी है। ओरसांग नदी झाबुआ जिले से निकलती है तथा एक विशाल रेतीली घाटी में होकर बहती है।

समुद्र के मुहाने पर है–हरि का धाम पास में है मीठी तलाई। हर यात्रा का अन्त होता है। आरम्भ होगा, तो अन्त भी होगा। नर्मदा की यात्रा का यहाँ अन्त है। नर्मदा यहाँ सागर से उतरती है और स्वयं सागर हो जाती है। सारी गति खोकर, स्वयं समुद्र जैसा आकार ग्रहण कर लेती है। वेग और उद्वेलन से रहित, उसके शांत–विस्तीर्ण पाट को देखकर यह कल्पना करना सहज नहीं है कि यह वही रेवा है जो मेकल–विन्ध्य की गर्वीली चट्टानों को तोड़कर जल प्रपातों पर धुआं उड़ाती, गुंजन करती आगे बढ़ती जाती है।

मध्य भारत की जीवन रेखा नर्मदा नदी पर अनेक जल संसाधन विकास परियोजनायें विकसित की गई हैं तथा अनेक नवीन परियोजनाएँ प्रस्तावित हैं। हमारे देश की इस प्राचीनतम नदी पर आधुनिकतम बांध बांधे जा रहे हैं। इस पर जितनी जल संसाधन विकास परियोजनाएँ विकसित की जा रही हैं शायद ही भारत की किसी अन्य नदी पर हों। नर्मदा का जो विशाल भण्डार अभी तक व्यर्थ जाता था, अथवा बाढ के कारण नुकसान पहुँचाता था, वह अब नहीं होगा। मध्य प्रदेश और गुजरात को तो इनसे बहुत लाभ हो रहा है।

नर्मदा की सरदार सरोवर परियोजना सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना है। यह चार राज्यों, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान की एक बहुउद्देशीय अंतर्राज्यीय परियोजना है। इसका क्रियान्वयन गुजरात सरकार द्वारा किया जा रहा है। यह एक महत्वाकांक्षी और तकनीकी रूप से जटिल सिंचाई योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य गुजरात राज्य के बड़े भागों की पानी की जरूरत को पूरा करने के लिए नर्मदा नदी के प्रवाह को नहरों के माध्यम से जोड़ना है। भारत की सबसे बड़ी जल संसाधन परियोजनाओं में से एक, इस परियोजना में एक बांध, एक नदी–तल बिजलीघर, एक मुख्य सिंचाई नहर, एक नहर बिजलीघर एक सिंचाई नेटवर्क भी शामिल है। नर्मदा के बेसिन के बाहर स्थित राजस्थान के जालौर और बाड़मेर जिलों में भी नर्मदा जल की आपूर्ति इस

परियोजना की बहुत बड़ी विशेषता है। इस परियोजना का अनुमानित प्रभाव एक बड़े क्षेत्रफल में फैला हुआ है और संभवतः चार करोड लोगों का जीवन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इससे प्रभावित होगा।

इंदिरा सागर परियोजना भी एक अन्य प्रमुख परियोजना है। खण्डवा जिले में स्थित इस परियोजना को नर्मदा सागर परियोजना के रूप में भी जाना जाता है। यह भी एक बहुउद्देशीय परियोजना है। इन दोनों के अतिरिक्त मुख्य नर्मदा नदी पर स्थापित ओंकारेश्वर, महेश्वर और रानी अवंतीबाई सागर बहुउद्देशीय परियोजनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। तवा परियोजना, बारना बाँध और कोलार बाँध नर्मदा की सहायक नदियों की प्रमुख परियोजनाएँ हैं। अभी नर्मदा नदी पर लगभग 18 परियोजनाएँ प्रस्तावित हैं, जिनकी कुल अनुमानित लागत 11300 करोड़ रूपए से अधिक है। इन बहुउद्देशीय परियोजनाओं से 278000 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई और 380 मेगावॉट बिजली के उत्पादन की संभावना है।

भारत में नदियों को जीवनदायिनी माँ के रूप में पूजा जाता है। नर्मदा सबसे महत्वपूर्ण पवित्र नदियों में से एक है। नर्मदा का आध्यात्मिक एवं संस्कृतिक महत्व जगत प्रसिद्ध है। नर्मदा में लोगों की अपार आस्था समाई हुई है। नर्मदा भारत वर्ष की सबसे पुरानी नदी है। गंगा से भी पुरानी। कहा जाता है कि गंगा में स्नान करने से जो पुण्यप्राप्त होता है, वह नर्मदा के दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। भारतवर्ष की सात श्रेष्ठ नदियों में नर्मदा का आह्वान भी किया गया है–

गंगे च यमुने चैव, गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे, सिन्धु कावेरी, जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू।।

नर्मदा को **'मइया'** और **'देवी'** होने का गौरव प्राप्त है। पुरातन काल में ऋषि–मुनियों की तपस्या स्थली रही नर्मदा आज भी धार्मिक अनुष्ठानों का गढ़ है। पूरे देश में यही एकमात्र ऐसी नदी है, जिसकी परिक्रमा की जाती है। मन में अपार श्रद्धा लिये हुए सैकडों साधु और तीर्थयात्री परिकम्मावासी के रूप में थकान और पैरों के छालों की परवाह किए बगैर 2624 कि.मी. की यात्रा करके अपने जीवन को धन्य बनाते हैं।

नर्मदा के किनारे सैकंडों तीर्थस्थल और मंदिर तो हैं ही, साथ ही अनेक स्थानों पर इसका सौन्दर्य देखते ही बनता है इसीलिए नर्मदा को सौन्दर्य की नदी कहा जाता है। असंख्य जड़ी–बूटियों और वृक्षों के बीच बहती हुई नर्मदा को मध्य–भारत की जीवन–रेखा कहा जाता है। सैंकडों छोडी–बड़ी नदियों को अपने में समेटती हुई नर्मदा कभी इठलाती हुई चलती है, कभी शांत बहती है, कभी संकुचित हो जाती है, कभी मीलों चौड़ाई का विस्तार ले लेती है तो कभी सहस्त्र धाराओं में विभाजित हो जाती है। जबलपुरश हर के पास भेड़ा घाट में संगमरमरी दूधिया चट्टानों को चीर कर इसको बहता देख दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। नर्मदा के निर्मल जल में स्नान करने से जो सुख प्राप्त होता है, वह अवर्णनीय है। यह अपने तट पर आए श्रद्धालुओं को आराम देती है, इसी से इसका नाम **'नर्मदा'** पड़ा। चुलबुली और शरारती स्वभाव के कारण नर्मदा को **'रेवा'** भी कहा गया है। स्कन्द पुराण में इस नदी का वर्णन **'रेवा खण्ड'** के अन्तर्गत किया गया है। कालिदास ने **'मेघदूतम'** में नर्मदा को रेवा का सम्बोधन दिया है, जिसका अर्थ है, पहाडी चट्टानों से कूदने वाली।

पवित्र नदी नर्मदा के तट पर अनके तीर्थ हैं जहाँ देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। इनमें अमरकण्टक, कपिलधारा, दूधधारा, शुक्लतीर्थ, सहत्रधारा, मण्डला, मान्धाता, भेड़ाघाट, बरमान, शूलपाणि, महेश्वर, भरूंच उल्लेखनीय हैं। विशेष रूप से ओंकारेश्वर, जो बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है, नर्मदा नदी के मार्ग में आने वाले महत्वपूर्ण तीर्थ–स्थलों में से एक है। नर्मदा शिव–तनया है। अनादिकाल में भगवान शंकर पर्वत–शिखर पर ध्यान में मग्न थे। किसी समय अनजाने ही उनके नील कण्ठ से नर्मदा का जन्म हुआ। जन्म लेते ही वह शिव की तपस्या में लीन हो गई। शिव ने नयन खोले तो इस असाधारण तपस्विनी को देखकर चकित हुए। शिव ने

नर्मदा को वर दिया, **"तुम अमृतमयी होगी। जो फल तीर्थवारि में अवगाहन से प्राप्त होता है, वह तुम्हारे दर्शन–मात्र से सुलभ होगा। तुम अपनी आकांक्षा के अनुरूप चिरकुमारी रहोगी। मुझे सदैव अपने निकट पाओगी। कलिकाल में तुम पतितपावनी गंगा के समान महात्म्य की अधिकारिणी होगी"**

सभ्यता के विकास के साथ–साथ नर्मदा के जल के विभिन्न उपयोगों का सिलसिला निरन्तर जारी है। यह भिन्न–भिन्न प्रकार से लोगों के जीविकोपार्जन का साधन भी है। इस प्रकार करोड़ों लोगों के लिए नर्मदा की परिभाषा **'जीवन–रेखा'** के रूप में है। नर्मदा भारतीय जनजीवन और लोक संस्कृति से अभिन्न रूप से जुड़ी है। नर्मदा नदी के किनारे किए जाने वाला निमाड़ महोत्सव एक ऐसा उत्सव है जो पूरे देश में प्रसिद्ध है।

आस्था के समुद्र में गोते लगाकर जिसने जो मांगा, उसे नर्मदा ने निराश नहीं किया । पर आइये हम भी जरा सोचें कि हमने अपनी 'नर्मदा मईया' के लिए क्या किया है? क्या उसके प्रति हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं है? अपनी नर्मदा माँ की केवल स्तुतिगान से काम नहीं चलेगा। सेवा भाव से इसकी परिक्रमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हम सबको जागरूक रहकर इसके संरक्षण और संवर्द्धन के लिए तथा इसे स्वच्छ रखने के लिए निरंतर प्रयास करना होगा ताकि माँ नर्मदा हम पर सदैव प्रसन्न रहे और हमारी अगली पीढ़िया भी मईया की कृपा एवं आशीर्वाद से लाभान्वित हो सकें।